जियरा बोले

महेन्द्र कुमार सिंह "नीलम" ग़ाज़ीपुरी

जियरा बोले

(भोजपुरी गीत संग्रह)

*

रचयिता

महेन्द्र कुमारसिंह "नीलम" गाज़ीपुरी

प्रकाशक

इलाहाबाद बुक हाऊस जीरो रोड इलाहाबाद

प्रथम संस्करण]

[मूल्य ढाई रुपया

★

जिस इन्दु ने

मुझे पूनमो

छाँव देकर

शीतलता प्रदान

की

उसी को यह

सस्नेह समर्पित

"नीलम"

मुद्रकः—न्यू आर्ट प्रेस, बख्शी बाज़ार इलाहाबाद ।

भूमिका

भारतीय स्वातंत्र्य के बाद देश के साहित्यिक समुदाय में जनपदीय बोलियों एवं उसके सांस्कृतिक सम्भारों के प्रति जो एक सहज आकर्षण दीख पड़ता है वह कई दृष्टियों से पुनरुत्थान को प्राप्त एक देश के लिए शुभ संकल्प सा प्रतीत होता है, यों इस देश के लोक साहित्य की ओर लोक-वार्ता के पश्चात्य विद्वानों ने स्वतन्त्रता से पूर्व ही हमारा ध्यान आकृष्ट किया था और वहाँ के कतिपय विद्वानों ने उस देश की सांस्कृतिक विरासत के अध्ययन के लिए यहाँ की जनपदीय भाषाओं को अपना कार्य क्षेत्र बनाया था। पाश्चात्य देश के विद्वानों का लक्ष्य मानव-नृ-विज्ञान के संदर्भ में लोक वार्ता का अध्ययन रहा, जिसकी परम्परा में अधीत भारतीय तद्विषयक सामग्री ने भारतीयों को इस जनपदीय साहित्य सम्भार की ओर पूर्ण-रूप से आकृष्ट किया और हमने इन जनपदीय बोलियों के अध्ययन की उपादेयता को समझा। दूसरी ओर देश की स्वतन्त्रता के बाद वहाँ के लोगों में अपने निकट के सांस्कृतिक सम्भारों के प्रति लगाव अपेक्षित सा हो है। लगता है इसी मनः स्थिति में हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार करते हुए भी प्रादेशिक भाषाओं के कुछ तरुण साहित्यकारों ने अपनी जनपदीय बोली को साहित्य सृजन का माध्यम बनाया। सच पूछा जाय तो उसकी दुहरी उपादेयता है। इससे राष्ट्र भाषा के अभिषेक में कोई कमी नहीं आई, अपितु इन प्रादेशिक भाषा को काव्य रचयिताओं ने अपनी रचना से उसके समादर के लिए मंगल घट सा प्रस्तुत किया; वस्तुतः यही कारण है कि भाषा शास्त्र और सृजनात्मक साहित्य दोनों की संदर्भ में हिन्दी के प्रादेशिक भाषाओं के आधुनिक कवियों का स्वागत करते हुए मुझे अभूत-पूर्व प्रसन्नता होती है। आज ब्रज कौरवी, अवधी, भोजपुरी; मैथिली, एवं मगही आदि के गीतकारों की रचनायें जब मुझे सुनने को मिलती हैं, तो उनमें एक सहज आकर्षण, जीवन्तता और आत्मीय वस्तुओं से रागात्मकता की अनुभूति होती है, हिन्दी के अतिरिक्त मेरी भी एक जनपदीय बोली है, मेरी मातृभाषा भोजपुरी है जो व्यवहार और अभिव्यंजन क्षमता के आधार पर भी अत्यन्त व्यापक एवं प्रभावशाली है। इस बोली के बोलने वालों की सांस्कृतिक भंगिमा देश से मौलिक एकता में अपना अन्यतम स्थान रखती है और राष्ट्रीय एवं सामाजिक दृष्टि से मैं इसे हिन्दी से असम्बद्ध मानने का पक्षपाती भी नहीं हूं, अस्तु इस बोली या भाषा की

रचनाओं के प्रति रागात्मकता के अतिरिक्त उपादेयता के कारण भी मैं वशीभूत हूँ। बहुत पहले जब मैंने अपने डी० लिट० के प्रबन्ध की सामग्री प्रस्तुत की थी, तो इस विषयक सारी सामग्री का दोहन कर मुझे इस जनपद की सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि तैयार करने का असीम आह्लाद हुआ था। मैंने तत्कालीन समय तक के उपलब्ध कवियों का साहित्यिक मूल्यांकन किया। मेरे कार्य से भी आगे वाले साहित्यकारों को प्रेरणा मिली। और आज जब मैं भोजपुरी के बहुत कवियों की रचनाओं की ओर दृष्टिपात करता हूँ तो मुझे एक आत्मिक सुखोपलब्धि होती है। सिद्ध और नाथों की परम्परा में विकसित इस बोली और इसके साहित्य रूप को कबीर ने मान दिया था। और अब तो अभिजात्य संस्कार वाले दर्जनों कवि इसकी साहित्यिक सुषमा की श्री वृद्धि में जुटे हुए हैं। श्री "नीलम" को इसी परम्परा में मानकर मैं इनकी अभिव्यक्ति की सहज मधुरिमा और भावना-प्रवणता के कारण इनके प्रातिभ वैशिष्ट्य के प्रस्फुटन का अभिलाषी हूँ।

श्री महेन्द्र कुमार सिंह "नीलम" भोजपुर अंचल के तरुण कोमल कवि हैं, ये गाजीपुर निवासी हैं। कवि के अतिरिक्त ये तूलिका के भी बहुत धनी हैं। इस संकलन का मुख्य पृष्ठ कवि का स्वतः निर्मित है। अन्य प्रसगों में इनके चित्र और काव्य का रूपाचित प्रकरण भी देखने को मिला है जो अत्यन्त मार्मिक एवं हृदय ग्राही है। इन्हें भोजपुरी गावों की प्राकृतिक सुषमा एवं जीवन रससिक्त रूप ने अभिभूत सा कर लिया है। यही कारण है कि वे यहाँ से लोक जीवन में गहरे पैठकर उसकी विशिष्ट मनस्थितियों का चारु चित्र सूक्ष्मता के साथ उतार सके हैं। सामान्य तथा इन्होंने जिन स्थितियों को स्पर्श किया है, उसकी सम्वेदना ग्राम्य जीवन के प्रेम, सौंदर्य, सारल्य एवं आकाँक्षाओं की है। प्रस्तुत सग्रह में "नीलम" के कुल २२ भोजपुरी गीतों का संकलन है। इस संकलन की अधिक तर गीतें आकाश वाणी प्रयाग केन्द्र से प्रसारित हो चुकी हैं। और उसने अपनी लोक प्रियता के कारण श्रोताओं का रसास्वादन भी किया है। प्रारम्भ में परम्परानुसार सरस्वती की वन्दना है। इस वन्दना में भी लोक स्वर निखर.उठा हैं, आज भी भोजपुर जनपद का बिरहा गायक जब अपने कानों में अंगुली लगाकर गुनगुनाना प्रारम्भ करता है तो उसका श्री गणेश होता है:—"आव ए सुरसति गरे चढ़ि बईठ, की कड़ि कड़िया दीह जोड़" लगभग ऐसा ही भावाकुल चित्र इनकी कविता में भीं देखने को मिला :—

आव माई आव माई, अईसन मन में अईहअ,
मन में जोति जगा के माई, फेरि कबहूँ अत जईहअ।
जेहिसे तोहरो दरसन पाईं, अईसन लगन लगा दऽ॥

इस गीत की भंगिमा "वीणा वादिनि वर दे" का अनुधावन करता हुआ नहीं प्रतीत होता, क्योंकि इस कवि का मानस तो लोक मानस से रससिक्त है। संग्रह की अधिकांश कविताएं ग्रामीण अंचल पर छिटकती हुई प्रकृति की सुरम्यता या बिरह वेदना को उदीप्त करने वाली स्थिति के चित्रण में परिपक्व हैं। जीवन की क्षण-क्षण परिवर्तित होने वाले आयामें में सुख-दुख, आशा-निराशा, से जो भाव भीने चित्र अंचल के परिवेश में सम्भाव्य बन पड़े हैं चाहे वे दाम्पत्य के हों या प्रणय विभोर स्थिति के, सबके भव्य चित्र अपनी आत्मीय भाषा में अंकति करने का प्रयास इस कवि का इष्ट सा लगता है। इस दृष्टि से कतिपय अंश अभिव्यक्ति की सूक्ष्म शक्ति के कारण स्मरणीय है।

गरमी के अवते किरिन जरावेलीं,
मनवा क बैर काढ़े सुरुज निरमोहिया।
भुईयाँ क अंग-अंग रहि-रहि तड़फेला,
लुहिया क बान मारे पछुवा बयरिया॥

प्रकृति का एक दृश्य यहाँ देखिए कवि की कैसी कल्पना है :—

अतना सिसकल रात की ओकर घटि गईल सुना उमिरिया,
भयल बेजार आज दिनवा, बा रोवति बा दुपहरिया।

बिरह का वर्णन :—

देखअ बैरी हंस दूर से हो कतराय उड़े,
नाहीं हो सनेसा लेई जाय सजनी।
दूध भात खाके काग अब निरमोही भइलिन,
पिया क बात कहे से लजाय सजनी॥

अन्न, जल अऊर सिंगार नाहीं भावे मोंहें,
देहियाँ झुराईल जईसे धनवा क पोर।
कईसे जरेला ओनकर दियरा कऽ बाती,
पतियों न लिखलन थोर॥

इश्वरीय प्रदत्त वस्तुओं में जीवन का सामन्जस्य कवि की मौलिकता का परिचायक है।

देखिए :—

नेहियाँ क अब तऽ नदिया फफाई,
बिरह के परती क मनवा जुड़ाई।
बूड़ि जईहें बिपति कछार,
बदरा आवत होईहें हमरे दुआर॥

★

यह भी स्थल अत्यन्त सराहनीय है। शाम का वर्णन कवि की अनुभूति द्वारा।

सुरुज क मुंह भईलन लाल,
पोतले हों जईसे गुलाल।

संभियों के अंगना में होरी हुरदंग भईल,-भईल, अबीरे कऽ मार हो।

काव्य के अन्य रसमय चारु प्रसंग पाठकों के सामने है और मुझे विश्वास है कि ये गीत रचनायें उनका रंजन करेंगी।

हाँ ! एक बात सम्भावना रूप में कहनी है वह यह कि जीवन के अन्य सार्थक एवं व्यापक रूपों की पकड़ के परिणाम में भी भविष्य में कुछ कविताए देखने को मिलें तो अच्छा हो ! इसकी मुझे नीलम से आशा भी है जिस दिशा की ओर इसका संकेत हैं वह "पंचवर्षीय योजना और किसान" से सम्बन्धित है। वशर्ते कि इस प्रकार की कविताओं में भावना की गहराई हृदय का लगाव, अनुभूति की सच्चाई, एवं अभिव्यक्ति की सशक्तता हो।

यह नीलम का प्रथम काव्य संकलन है। इनकी प्रतिभा प्रस्फुटित होकर भोजपुरी काव्य के आँगन में नया-नया बिरवा रोपे इससे बढ़कर प्रसन्नता की बात क्या होगी, मैं अपने समस्त मंगल कामना के साथ भोजपुरी के इस उभरते हुए तरुण कवि की मौलिक रचनाओं का स्वागत करता हूँ और विश्वस्त हूँ कि यदि ये अपनी रचना प्रक्रिया जागरुक रखेगें तो भोजपुरी ही नहीं, अपितु हिन्दी साहित्य को मुल्यवान उपलब्धि होगी।

डा० उदय नारायण तिवारी,
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
जबलपुर युनिवर्सिटी।

दो शब्द

मानव अभिलाषाएं अनन्त है, जीवन में कुछ ही पूर्ण हो पाती हैं क्योंकि उनके ऊपर विजय पाना कठिन हैं। जिस धूल माटी में खेल कूद कर मैंने अपना शैशव बिताया था उसकी छाप जीवन प्रर्यन्त रहेगी। यही कारण है कि जिला गाजीपुर छोड़ने के बाद इस प्रयाग की पावन भूमि में वहाँ के किलकते हुए भावनाओं की पूर्ति कर रहा हूं।
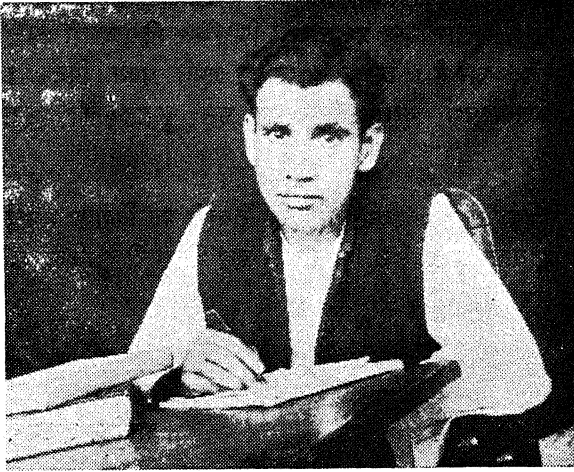
महेन्द्र कुमार "नीलम"

भोजपुरी गीतों का यह काव्य पुष्प "जियरा बोले" आप के समक्ष है। मैंने जो कुछ चयन किया है वह वातावरण से ही प्रभावित होकर। जिस माटी ने जन्म दिया उसकी अमिट छाप तो प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से हर मनुष्य के जीवन पर पड़ती है और उसी के वशीभूत होकर मानव सृजनात्मक कार्य करता है चाहे वह जिस देश काल का क्यों न हो, प्रकृति अपनी गोद में उसे दुलार कर उठने का सहारा देती ही है यही कारण है कि मुझे भी इस वातावरण से

प्रभावित होना ही पड़ा। भिन्न-भिन्न दृष्टि कोण को लेकर मैंने कुछ मानवीय एवं प्रकृति के प्रत्यक्ष और परोक्ष भावनाओं को स्पर्श किया है तथा समाजिक परिवर्तन जो समयानुकूल होते रहते है उसकी ओर भी दृष्टिपात किया है, इसमें मुझे कहाँ तक सफलता मिली है इसके निर्णायक तो आप पाठक गण ही हैं। यदि इस संग्रह के पढ़ने में कुछ आपको आनन्द मिला तो वह मेरी सफलता होगी। इन गीतों के साथ-साथ मैंने चित्रों का भी सृजन किया है जो उन्हीं आधार पर हैं, आशा है कि ये चित्र भी आपका मनोरंजन कर सकेगें। अधिकतर इस पुस्तक के गीत आकाशवाणी इलाहाबाद से प्रसारित हो चुके हैं। मैं अपने उन अभिन्न मित्रों एवं भाइयों को कभी भी नहीं भूल सकता जो कि मुझे बार-बार प्रोत्साहन एवं उत्साह देकर ऐसा कार्य करने के लिए बाध्य किए हैं। जिनमें सर्व श्री, श्री मन्ननारायन द्विवेदी, मदन मोहन "मनुज" "कैलाशनाथ मेहरा, महेश्वर नाथ सिंह, युक्ति भद्र दीक्षित, कमला शंकर सिंह तथा अपनी भी एक प्रयाग में साहित्यिक संस्था "नव प्रभात" है जिसके सभी सदस्यों का आभारी हूँ जिनका बहुत बल मिला है। इस सुअवसर पर अपने पूज्य पिता ठा० रघुवीर चंद्र सिंह का चरणस्पर्श करता हूँ जिनको इस पुस्तक की बहुत दिनों से उत्कंठा थी।

अन्त में श्रद्धेय डा० उदय नारायण तिवारी का विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने मुझे बहुत प्रोत्साहित किया और इस भोजपुरी साहित्य के आँगन में पनपने का अवसर दिया।

महेन्द्र कुमार "नीलम"
अग्रसेन इन्टर कालेज,
प्रयाग !

सन्—१९६३

———

सरस्वती-वंदना

कमल बईठ हाथन में बीना लेहले तान सुना दऽ।
सुत्तल भाव हिरदय कऽ माई अब तऽ आज जगा दऽ।।
हंस वाहनी हऊ तूं माई हंस सनेसा पठा दऽ
सुत्तल भाव हिरदय कऽ माई अब तऽ आज जगा दऽ।

मन कऽ दूर करअ अन्हियारा अब तऽ मोरी माता,
दऽ असीस चरनन में तोहरे नावत हईं हम माथा,
दुरगुन हमरा मन कऽ माई छिन में आज भगा दऽ
सुत्तल भाव हिरदय कऽ माई अब तऽ आज जगादऽ।।

★

कईसे पूजा-पाठ करीं हम गियान नहीं हे माई,
अईसन बल दे देतू हमके लिखि तोहार गुन गाईं,
सगरो छिन में हो उजियारा अईसन जोति जगा दऽ
सुत्तल भाव हिरदय कऽ माई अब तऽ आज जगा दऽ।।

★

बिनती करीं तुहार हे माई आई हिरदय में बईठऽ,
भाव जगा के हमरी लेखनी में माई तूं पईठऽ;
निसि-दिन तोहरो गुन हम गाईं अईसन लगन लगा दऽ
सुत्तल भाव हिरदय कऽ माई अब तऽ आज जगा दऽ।।

जे तोहार सेवा हो कईलस अमर होई गयल माता,
हम अज्ञान जनम कऽ माई तूं बाड़ हो दाता,
करीं अमर गाथा तुहार हम अईसन भाव बुला दऽ,
सुत्तल भाव हिरदय कऽ माई अब तऽ आज जगा दऽ।।

आवऽ माई आव माई अईसन मन में अईहऽ,
मन कऽ जोति जगा के माई फेरि कबहूँ मत जईहऽ;
जेहिसे तोहरो दरसन पाईं अईसन जोग सिखा दऽ
सुत्तल भाव हिरदय कऽ माई अब तऽ आज जगा दऽ। ।
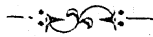
★ फागुन की साँझ ★

❖

बनवा में चिरई गावे ले,
जियरा कऽ हाल सुनावे ले,
संझियाँ में गते गते मनवा डोलावे लागल
फागुन कऽ अबतऽ बयार हो ।

सुरूज कऽ मुंह भईलन लाल,
कि पोतलन मुहें में गुलाल,

कि संभियाँ के अंगना में, होरी हुरदंग भईल
भईल अबीरे कऽ मार हो ।

...

फुलवन में छिपलन बसंत,
जईसे गोरिया के अंखिया में कंत,

मनवा हो डोली जाला, भवँरा भईलन मतवाला
देहियाँ के पावे ना सम्हार हो॥

इनरे पर पीए कोई भंगऽ,
कोई फाग गावे बाजे मिरिदंग,

फागुन के अवते, गँऊवन कऽ रंगऽ बदलल
बदलल सब संसार हो ॥

जाड़ बसेलन ओोहि पार,
चिरई कहेले पुकार,
अइसन जनाए लागल, गरमी के दुल्हाके
कान्हि पर धरिके आवत होईहें कहार हो।

फागुन कऽ बयार

भुईयाँ फूल कऽ चढ़ावे अब हार,
पहुनवा फागुन अईलन दुआर,

गम गम गमके गुलबआ कऽ बगिया,
आम बऊरईल सेमर बन्हलन पगरिया,
देखिके हसेलंऽ कचनार हो,
फागुन अईलन दुआर हो ॥

फुलवन में छिपलन आईके बसंत राजा,
रसवा कऽ लोभी भंवरा गुन गुन गुन बजावे बाजा,

धरती करऽ अब सिंगार हो,
फागुन अईलन दुआर हो ॥

इनरे पर बईठ कोई पीएला भंगऽ,
कोई फाग गावे बईठ ढ़ोलक के संगऽ,

कि ऐहि में बूड़ल संसार हो,
फागुन अइलन दुआर ॥

गली गली धूम मचल फाग अऊर होरी कऽ,
हिल-मिल गाँव गावें राधा किसुन जोरी कऽ,

कि होला अबीरे कऽ मार हो,
फागुन अइले दुआर ॥

अगिया लगावे बहि बसंती बयरिया,
मदन सतावे गोरी बोले जब कोईलिया,

कि सिहकेला छिप के पियार हो,
फागुन अईलन दुआर हो ॥

———
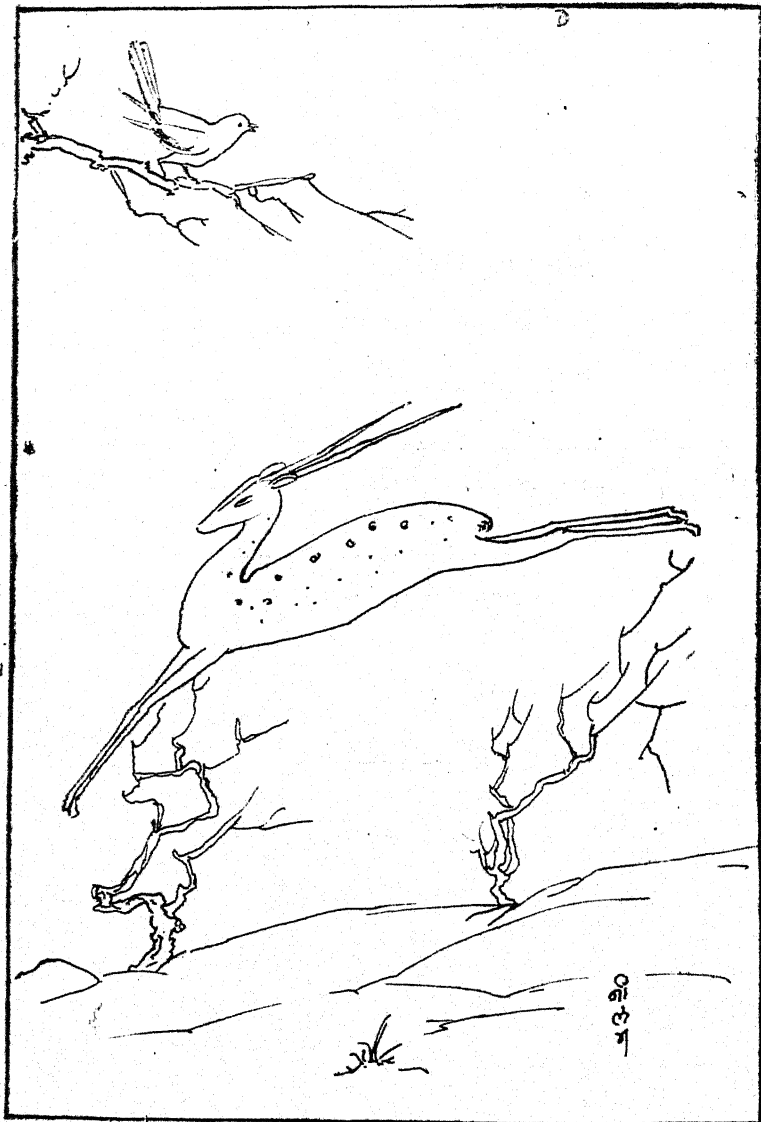
जरेला गऊँवा हमार

गरमी में लुहिया तपनिया से चारू ओर,
बहे लागल पछुवा बयार हो,
आगी बरसावेलन सुरूज किरनिया से,
जरे लागल गऊँवा हमार हो॥

सगरो झुराई गईल भुईयाँ कऽ दुबिया हो,
नद्दी कऽ फार जियरा निकलल रेतिया हो,
नेहियाँ तऽ छोड़ि चिरई परदेस उड़ि गईलिन,

पड़लन कछार दरार हो,
रामा जरे लागल गऊँवा हमार हो,

★

बिरही अकास देखऽ रोवेलन मनवा में,
चिरई पियास के हो रोवेलिन बनवामें,
ताल अऊर पोखरी झुराई गईल चारू ओर,

सूखे लागल सगरो ईंनार हो,
रामा जरे लागल गऊँवा हमार हो ॥

★

चारू ओर नाचे ले देखऽ अब खरवनियाँ,
मिरिगा पियास धावे बूझे कि मिली पनियाँ,
नद्दी के भरमऽ में धावत भरी जालन,

पवलन नऽ कबहूँ किनार हो,
रामा जरे लागल गऊँवा हमार हो,

★

खेतऽ खरिहान में दँवरी चले हो लागल,
उखियन के पेड़ियन में पनिया बहे हो लागल,
पाकड़ पिपरा के छहिँया में गोरू बईठें,

बईठेलिन गईया दुधार हो,
रामा बहे लागल पछुँवा बयार हो,

★

धरती पर आन्ही अऊर अन्हड़ देखात अब,
नन्हकी चिरईया बड़ेरवन लुकात अब,
रतिया तऽ नन्ही चुक्की घूँघटा के डार लेहलस,

दिनवा तऽ भईलन पहार हो,
रामा जरे लागल गऊँवा हमार हो ॥

★

लुहिया तऽ रहि रहि के देहिया जरावेले,
रतिया गरम होके मन उमसावले,
मनवा कऽ धीर गईल देहिया अधीर भईल,

बहेला पसनेवा कऽ धार हो,
रामा जरे लागल गऊँवा हमार हो ॥

★

गुहार
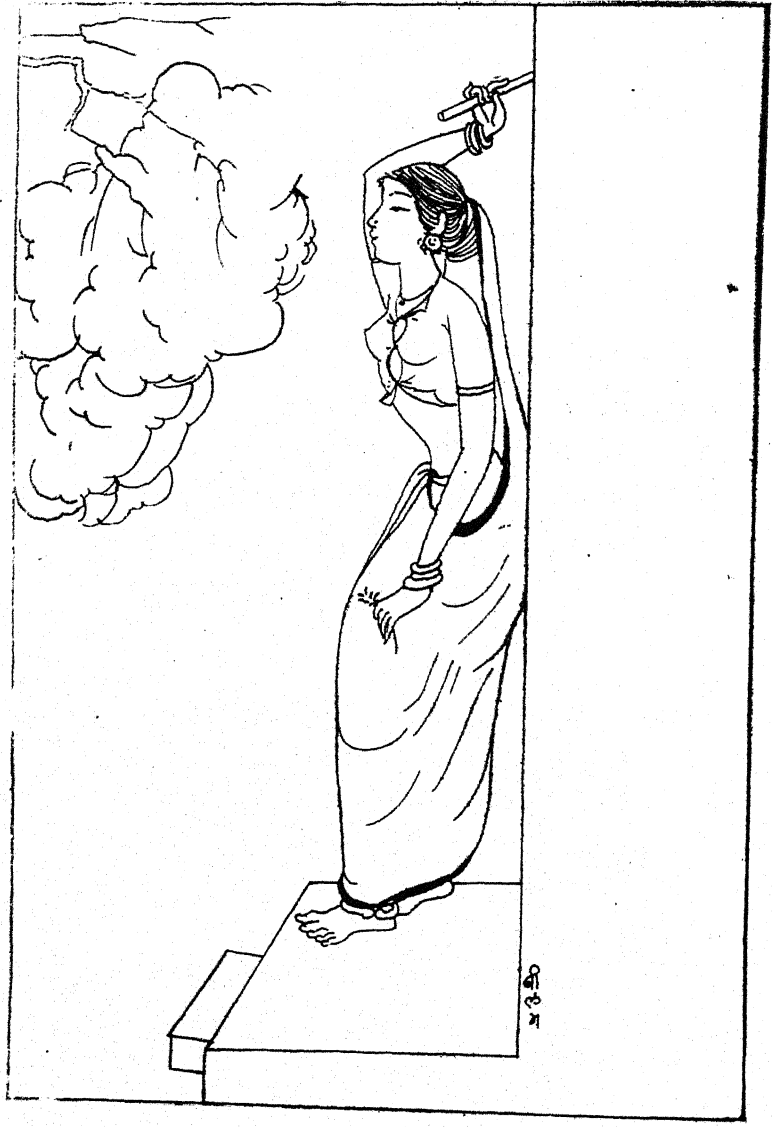
धरती करेले अब तऽ गुहार
कि आवऽ बदरा,
जब से तूँ परदेसी भईलऽ, सूना लगे अकास हो,
बढ़ल सुरुज कऽ तपन, अऊर बेधत बा गरम बतास हो,
मन व्याकुल बा तोहरे खातिर,
जियरा कहे पुकार,
कि आवऽ बदरा,,

★

सूखल ताल अऊर पोखरी, कि कुईयाँ गईल पताल,
कोराँ में रेतिया के लेहले, नदिया भईल बेहाल,

नेह छोड़ि चिरई उड़ि गईलिन,
रोवत सुनऽ कछार,
कि आवऽ बदरा, ॥

★

ना जाने कवने असगुनवां, बढ़ल बा सुनऽ तपनियाँ,
गऊवाँ के पिछवारे आके, नाचत बा खरवनियाँ,

माथ धुनत बा सोन चिरइया,
रोवत जार बेजार,
कि आवऽ बदरा, ॥

अतना सिसकल रात कि ओकर, घटि गइल सुना उमिरिया,
भयल बेजार आज दिनवा बा, रोवत बा दुपहरिया,

पाकड़ पिपरा के छहियाँ में,
हाँफे गाय दुधार,
कि आवऽ बदरा,

★

दल बल बान्हि चले अन्हड़, कि जियरा बहुत डेरावे,
भरम जाल पनियाँ कऽ अइसन, मिरिगा प्रान गँवावे,

जिनगी पड़ल अथाह आज बा,
कईसे लागी पार,
कि आवऽ बदरा ॥

———

जेठ कऽ तपन

●

गरमी के अवते किरिन जरावेलीं,
मनवा कऽ बैर काढ़े सुरूज निरिमोहिया,
भुईयाँ कऽ अंग अंगऽ रहि रहि तड़फेला,
लुहिया कऽ बान मारे पछुंआ बयरिया ॥

बदरा के खातिर उपराँ बिरही अकास रोवे,
पनियाँ के खातिर तरवाँ भुईयाँ पियास रोवे,
चान अऊर तरईन कऽ कुईयाँ झुराईल,
कि धरती कऽ छूछ भइलिन सगरो गगरिया,
लुहिया कऽ बान मारे पछुवाँ बयरिया……

दुबियाँ कऽ अँचरा हटल भुईया उघार लागे,
लजिया बचाव केहू बहियाँ पसार माँगें,
आवऽ आवऽ आवऽ परदेसी मोरे बदरा,
क कहँवा तूँ भूली गईलऽ आपन डहरिया,
लुहिया कऽ बान मारे पछुवाँ बयरिया……

पुरुबे से अन्हड़ चले पच्छिमे से आन्ही,
रेतिया में मिरिगन कऽ लूटे जिनगानी,
खोतवन बड़ेरवन से झाँकि झाँकि सुटकेली,
चींव मींव बोलेलीं हो नन्हकी चिरईया,
लुहिया कऽ बान मारे पछुवाँ बयरिया……

नाचे ले खरवनियाँ गऊवाँ पिछिवारे,
थकल बटोही बईठें आई के दुआरे,
रतिया कऽ अब तऽ जिनगी हो घटि गईल,
दिनवा कऽ सवंसो बढ़ल हो उमिरिया,
लुहिया कऽ बान मारे पछुवाँ बयरिया……
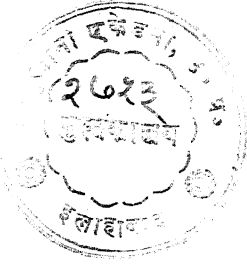
दंवरी चले अब तऽ खेत खरिहान हो,
नईकी फसिलि दावें जुटि के किसान हो,
पिपरा की छहियां में गउवाँ कऽ गोरूआ,
करेलन पगुरी भरी दुपहरिया,
लुहिया कऽ बान मारे पछ्वाँ बयरिया······

रेतिया के कोराँ लेहले नदिया अब सिसकेले,
तलवा में बईठे खातिर चिरई हो झिझकेले,
ताल अऊर पोखरी कऽ देहियाँ झुराईल,
कि फाटल कछारे के हियरा दररिया,
लुहिया कऽ बान मारे पछ्वाँ बयरिया······

पंचवर्षीय योजना

खेतवा में धान लहरे,
नहरे में पानी,
भुइँ मुसुकाइल,
गऊँवा पवलन जिनगानी ॥

ताल अऊर पोखरी कऽ,
गयल हो जमनवाँ,
पूर अऊर रहट भईलन,
सुनऊ हो सपनवाँ,
ट्यूब वेल अब करे सिंचाई,
कुईयाँ भईल हो पुरानी-राम............

★

गऊँवन कऽ मिटल अबऽ,
सुनअ अन्हियारा,
बिजुरी के खंम्वहन से,
मिली उँजियारा,
दियरा कऽ गंईल जमाना,
कहे सब कहानी- राम…………

बैर भाव से नाहीं होला,
सुनऽ बंटवारा,
पंचईती गऊवन में,
करे निपटारा,
नाहीं अब केहू संगी,
करी मनमानी-राम…………

बान्हे से रोक न जाला,
बाढ़े कऽ पानी,
चऊवन कऽ जान बचल,
सुखी गाँव कऽ प्रानी,
खेते में खेतिहर हो गावें,
लऊटल बा जवानी राम…………

★

हर बैल थकहर भईलन,
टैक्टर कऽ काम बा,
जे जयदाद अधिक उपजावे,
ओही कऽ अब नाम बा,
जे सबकर हो कंठ भरावे,
ऊहे बड़ऽ दानी- राम...........

★

कल-करखाना बढ़ेला दिन-दिन,
मेहनत घटि जाला,
गियान बढ़े खातिर गऊँवन में,
खुलल पाठशाला,
विद्या माई के अईला से,
मिटल अनूठाँ निसानी-राम...........

★

हिल मिल गऊँवा सड़क बनावे,
बिन कऊड़ी बिन दाम हो,
जहाँ पसेना गिरेला भईया,
ऊहाँ बनत बा धाम हो,
जाति पाँति कऽ भेद मिटल,
अब चलल हुक्का पानी-राम...........

———

बरसात कऽ विरहनो

चढ़ि के अकसवा बदरा हो छाई गईलन,
बरखा कऽ पड़लिन फुहार हो,
अईसे में कंता बिदेसवा से आई जइता,
जिनगी में आई जात बहार हो,

★

सोन्ह सोन्ह धरती महक गईल चारू ँ ओर,

बुनियाँ गिरेलीं रसधार हो,

सुखली हो दुबिया हरी भईलिन भुइयवाँ,

ओरिया चुवेलीं दिन रात हो,

अईसे में कंता बिदेसवा से आई जइता,

जिनगी में आई जात बहार हो,

★

नद्दी ताल भर गइलिन पोखरी हो भरि गइलिन,

आइल अब बरसात हो,

हंसवा हो उड़लन पिया परदेसी कऽ,

लेहले सनेसा पियार हो,

अईसे में कंता बिदेसवा सें आई जइता,

जिनगी में आई जात बहार हो,

★

मनवा कऽ दुखड़ा कहे के हो बदरा से,

बन में कोईलिया बोलि जात हो,

मोर अऊर दादुर पपीहरा हो बोले लगलन,

मन उनहूँ कऽ हरसात हो,

अईसे में कंता बिदेसवा से आई जईतऽ,

जिनगी में आई जात बहार हो,

★

पुरुवा के गोदिया में फेड़वा हो झुमें जईसे,

मद पीके कोई झूमी जाय हो,

जगवा के लोगन के अईसन अनन्दऽ मिले,

जईसे निधन धन पाय हो,

अईसे में कंता बिदेसवा से आई जईता,

जिनगी में आई जात बहार हो,

★

बैरिन बिजुरी चमक जाले बदरा से,

जियरा बहुत डरि जाय हो,

दियरा जरा के अधी रात जोहे गोरिया,

मनवा बहुत अकुलाय हो,

अईसे में कंता बिदेसवा से आई जईता,

जिनगी में आई जात बहार हो ॥
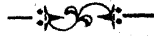
सरद

भुईयाँ उतरल सरद महिनवाँ नु रे
जिया काँपि काँपि जाय ॥

सुखी भईलन हो अकास,
सीत बहे ला बतास,
देखख नद्दी दुबराईल,
ताल पोखरी अघाईल,

बरखा गईलन करे अब गवनवाँ नु रे
जिया काँपि काँपि जाय, ॥

★

सुरुज मुँह ना देखावे,
पाला ओनके डेरावे,
ठिठुरै पुरबे सबेरा,
साँझ भूले आपन डेरा,

रात लमहर छोट भयल दिनवाँ नु रे,
जिया काँपि काँपि जाय, ॥

बने चिरई न बोले,
दादुर मुँह नाहीं खोले,
मिटल सबकऽ पियास,
न छूटे जोगनी कऽ आस,

जब बोले रात सियरा सिवनवाँ नु रे,
जिया काँपि काँपि जाय, ॥

मटर, राई, चना, फूले,
फूल सरसों कऽ भूले,
तीसो ठुमुक ठुमुक मनवा
कऽ बतिया हो बोले,

देख गेहूँ जव, लहरे किसनवाँ नु रे,
जिया काँपि काँपि जाय, ॥

★

जब कुहेसा छाई जाय,
नाहीं पैंयड़ा देखाय,
जिया परबस होवे,
देही रहि रहि जुड़ाय,
सुरुज गतै गतै उतरें अगनवाँ नु रे,
जिया काँपि काँपि जाय ॥

———
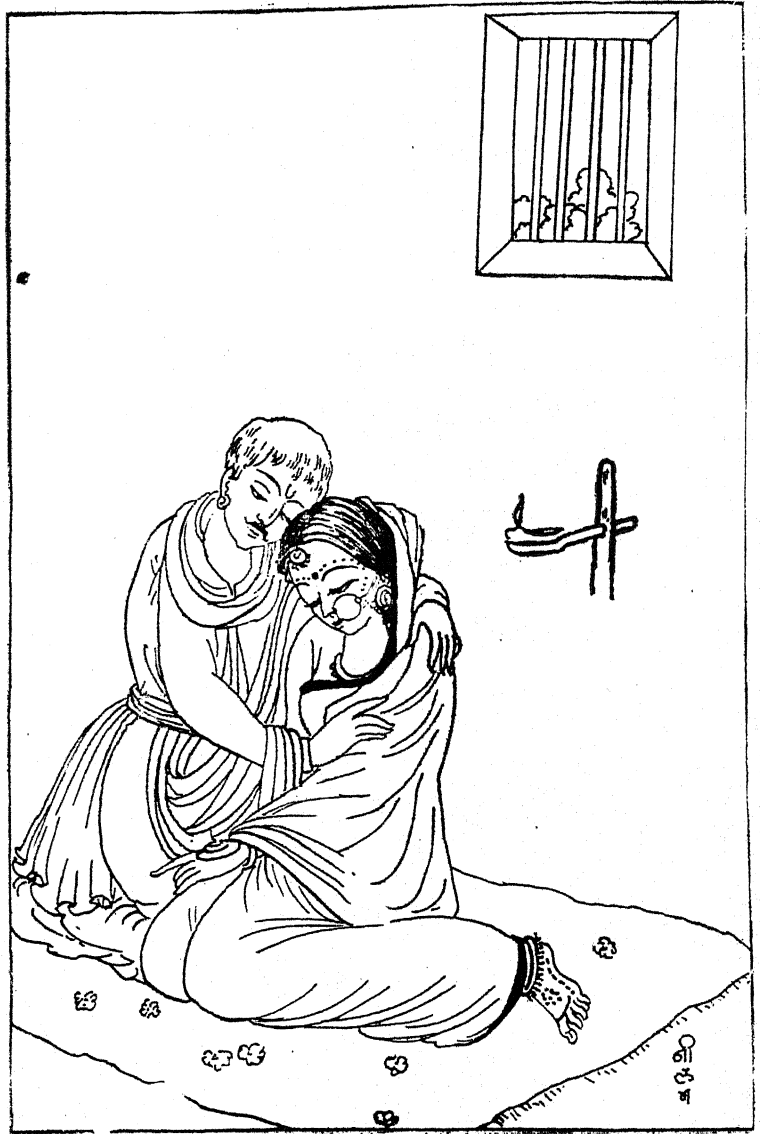
जुदाई

होई गइलन भिनसार, बुड़लीं तरईया,
बिरिछन पर जागि जागि बोललिन चिरईया ॥

कांपे हो लगल देक्ख दियना कऽ जोतिया,
छिन में छुटि जईहैं इनकर जिनगी कऽ सथिया,
दिनवा में कवन होईहें धीर कऽ देवईया,
पेड़वन पर जागि जागि बोललिन चिरईया ॥

★

मन अब मुरझाइल जईसे हो की फुलवा,
सोचो सोची तोहरा के लागे जईसा सुलवा,
मोरे कंता निरमोही बन मत जरहिया,
बिरिछन पर जागि जागि बोललिन चिरईया ॥

मन नाहीं धीरज पवलन मिली के हो रतिया में,
बहुत कुच्छू रहि गईलन कहे के बतिया में,
सुनलऽ तूँ अँखियन में आँसू जनि भरहिया,
पड़ेवन पर जागि जागि बोललिन चिरईया ॥

रतिया तऽ बीतल अईसे जईसे मन कऽ सपना,
केतनो बनावऽ चाहे होलन नाहीं अपना,
अईसे ही तूँ मति कंता हमके बिसरिया,
बिरिछन पर जागि जागि बोललिन चिरईया ॥

अब कबऽ आवन होई सचऽ सचऽ बता दऽ,
कईसे हम धीरज धरबऽ बतिया सिखा दऽ,
हमरे तऽ जिनगी कऽ तूहीं तऽ खेवईया,
पेड़वन पर जागि-जागि बोललिन चिरईया ॥

****

सावन कऽ फुहार

●
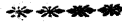
सावन कऽ पड़लिन फुहार चारू ओरियाँ,
कि हमरे पिया हो परदेस सजनी,
बतिया बहुत कुछू कहे के बा मनवा कऽ,
कईसे हम भेजीं हो सनेस सजनी ॥

बड़ी बड़ी बुनियाँ गिरेलीं हो भुईयवाँ,
ओरिया चुवेलीं दिन रात सजनी,
पुरूवा के चलला से तन अंगड़ाई ले ला,
बिरह सतावे बरसात सजनी,
बतिया बहुत कुछू कहे के बा मनवा कऽ,
कईसे हम भेजीं हो सनेस सजनी ॥

★

ताल अऊर पोखरी में आईल बा जवनियाँ,
नदिया बहे ले फुफकार सजनी,
अईसे में छोड़ि कंता मोहें परदेस गईलन,
जिनगी पड़ल बा मजधार सजनी,
बतिया बहुत कुछू कहे के बा मनवा कऽ,
कईसे हम भेजीं हो सनेस सजनी ॥

★

मोर अऊर दादुर पपिहरा हो आई गईलन,
दुखड़ा कहे के अपने मन कऽ सजनी,
अमवन के पेड़वन के झुरमुट से झाँकि झाँकि,
बोले हो कोईलिया देक्ख बन कऽ सजनी,
बतिया बहुत कुछू कहे के बा मनवा कऽ,
कईसे हम भेजीं हो सनेस सजनी ॥

★

फुलवा खिलेलन जूही अऊर हो चमेलिया कऽ,
बेलवा खिलेला आधी रात सजनी,
पवन-देव फईलाई देलन महकिया तऽ,
मनवा नऽ बस में रहि जात सजनी,
बतिया बहुत कुछू कहे के बा मनवा कऽ
कईसे हम भेजीं हो सनेस सजनी ॥

★

बिजुरी सवति डाह रखिके हो मनवा में,
रहि रहि हमके जराए सजनी,
हमके अकेले जानि बदरा हो गरजें तड़पे,
देहियाँ भिगाँ के हो पराए सजनी,
बतिया बहुत कुछू कहे के बा मनवा कऽ,
कईसे हम भेजीं हो सनेस सजनी ॥

देक्खऽ बैरी हँस दूर से ही कतराय उड़े,
नाहीं हो सनेसा लेई जाए सजनी,
दूध भात खा के कागा अब निरमोही भईलन,
पिया कऽ बात कहे से लजाए सजनी,
बतिया बहुत कुछू कहे के बा मनवा कऽ,
कईसे हम भेजीं हो सनेस सजनी ॥

———
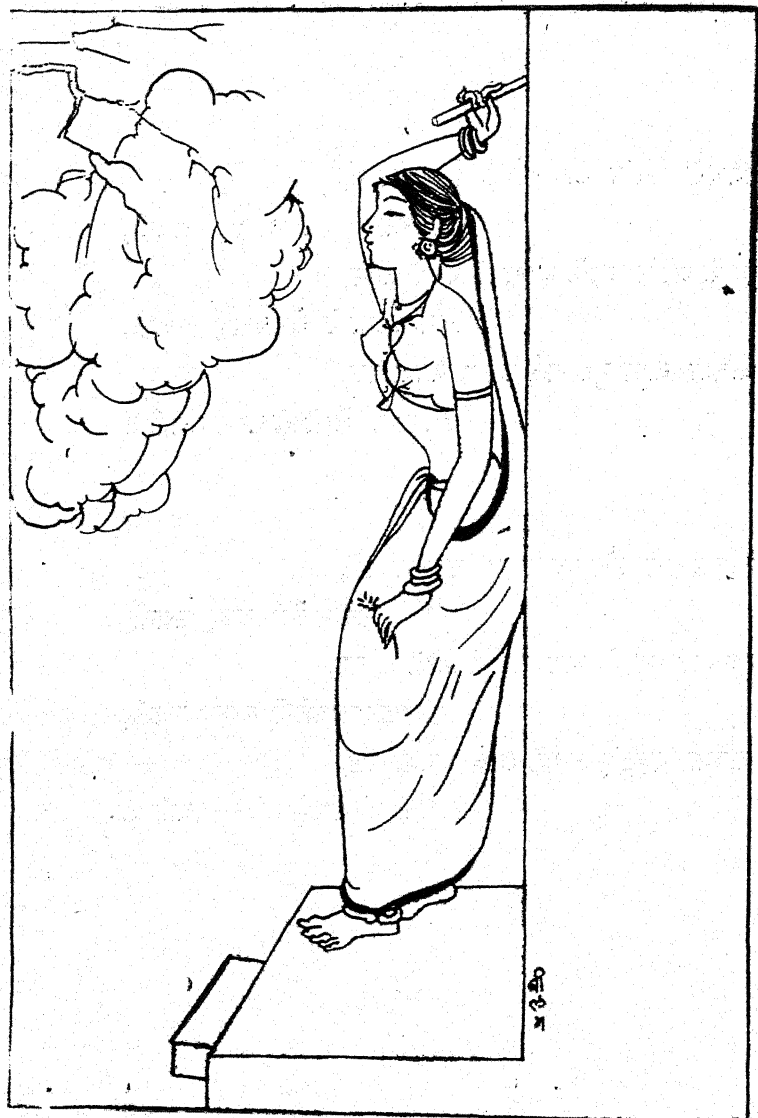
★ बदरा आवत होईहैं ★

बदरा आवत होईहैं हमरे दुआर,
क लेहले सनेसा पियार हो॥
नेहियाँ कऽ अब तऽ नदिया फफाई,
परत परत परती अगराई।
कि बूड़ जईहैं बिपति कछार,
बदरा आवत होईहैं हमरे दुआर॥

★

दुखवा का भरिहें ताल अऊर तलईया,
मेघा नीयर जियरा ई लीहें हो बलईया।

कि बहिहें जब पुरूवा बयार,
बदरा आवत होईहें हमरे दुआर ॥

★

रतिया में झिंगुरन कऽ बाजी हो बंसुरिया,
बेला नीयर सुधिया कऽ गमकी पखुरिया।

कि झुकि जईहें सईजन कऽ डार,
बदरा आवत होईहें हमरे दुआर ॥

★

गम गम गमकी केहू कऽ पिरितिया,
ढ़ही ढ़िमिलाई जइहें दुखवा कऽ भितिया।

जब बुनिया गिरी रसधार,
बदरा आवत होईहें हमरे दुआर ॥

★

दुअरे पर ओरिया कऽ चूई जब पनियाँ,
अंगना में बुन्नियाँ कऽ बाजी पयजनियाँ।

झनक उठी मनवा कऽ तार,
बदरा आवतऽ होईहें हमरे दुआर ॥
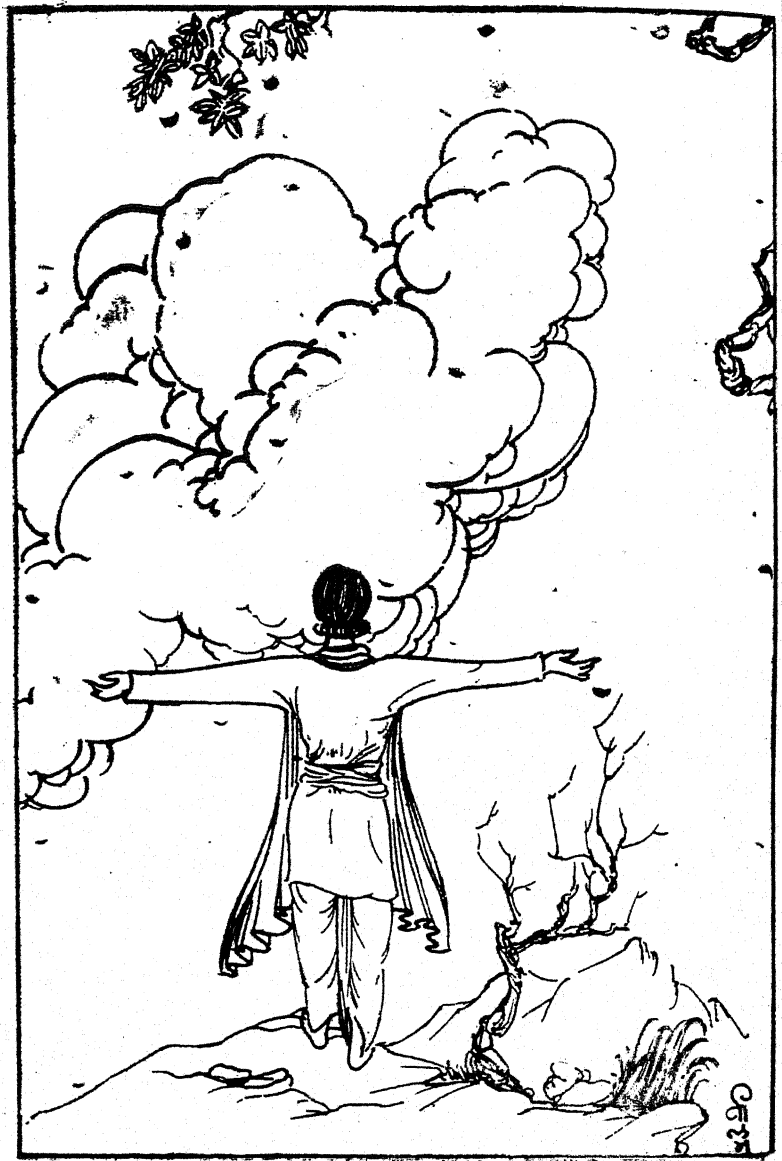
बदरा से

नेहियाँ कऽ पनियाँ लेहले चाहे केतनो धावऽ बदरा,
नील हो अकसवा कऽ पईबऽ ना किनारा········

★

रहि रहि भर लेहलेऽ, चाँन सूरूज झोरिया में,
तरईन के बईठाई लेहलऽ, तूँ डोलिया में।
सज धज जात हऊवऽ कवने नगरिया तूँ,
मरि जईब तबहूँ न पईबऽ हो दुआरा.........

★

पुरवा के संगवा में, हंसत बोलत आयल हऊवऽ,
बिजुरी गोरिया के सत, चुनरी लिआयल हऊवऽ।
साध नाहीं पूर होई, पईहें, हो जगवा में,
धावत धावत थकि जईबऽ, पईबऽ नाहीं पारा.........

★

अँसुवन के गिरला से गली जई हैं देहियाँ हो,
तबहूँ ना पुर होई पईहें तोहार नेहियाँ हो।
तड़प तड़प रही जईबऽ अपने तूँ मनवा में,
कबहूँ नऽ मिली पईहें तोहारो पियारा...........

★

बिरही तूँ होके सुनिलऽ बिरहिन जरावे लऽ,
तबहूँ तूँ जाने काहे, मनवा के भावेलऽ।
गरज गरज चाहे केतनो, अरज तूँ कर लऽ हो,
सूनी नाहीं केहू बतिया केतनो पुकारा........

बरखा बहार

❖

आईल बरखा कऽ बहार,
सुनऽ मोरी सजनी,
पुरुवा बहे ललकार,
सुनऽ मोरी सजनी ॥

बुनियाँ नाचे धरती अँगना,
बदरा अईलन करे गवनां,
धरती कईलस हो सिंगार,
सुनऽ मोरी सजनी ॥

★

ताल पोखरी अघाईल,
नद्दी कऽ नेहियां फफाइल,
बूड़ल सँवसों कछार,
सुनऽ मोरी सजनी ॥

★

मोर दादुर तान छोड़लन,
पंछी आपन बान तोड़लन,
उड़ल बकुला कतार,
सुनऽ मोरी सजनी ॥

★

भुईयाँ परत परत फूलल,
दुबिया पुरुवा गोदी झूमल,
नाहीं लऊकत दरार,
सुनऽ मोरी सजनी ॥

★

पुरुवा बैरी सनन बोले,
पेड़ कऽ जियरा हो डोले,
धरती होले हो उघार,
सुनऽ मोरी सजनी ॥

बदरा जियरा डरावे,
बिजुरी सवति बन जरावे,
करे चाँरू ओर अन्हार,,
सुनऽ मोरी सजनी ॥

सुनि पपीहा कऽ गुहार,
देहियाँ गले जस मनार,
अखियाँ चुवैं ओरी कऽ धार,
सुन मोरी सजनो ॥

बारह मासा

रोई रोई कहे महतारी हो रामा
राम बिनु मनवा भिखारी हो रामा,

राम बन गईलन लखन बन गईलन,
सीता बिनु नगरी दुखारी हो रामा ॥

चईत मास अवते झुराई फुलवारी हो,
के सींचो फुलवन किआरी हो रामा,
रोई रोई कहे महतारी हो रामा…

वईसाख जेठवा, में लुहिया तपनियाँ से,
जरि जईहें मोर बनवारी हो रामा,
रोई रोई कहे महतारी.........

चढ़ते अकसवा जब बदरा हो छाई जईहें
ठाड़ होई हैं कवने दुआरी हो रामा
रोई रोई कहे महतारी.......

सावन भादों में ओरिया के चुवते,
सीता कऽ भीजिहैं सारी हो रामा
रोई रोई कहे महतारी.........

कुआर, कातिक, में सरद के अवतें,
अरती के ओनकर उतारी हो रामा
रोई रोई कहे महतारी.......

★

अगहन, पूस, माघ जड़वा जब पड़िहें,
लालन के तन पाला मारी हो रामा,
रोई रोई कहे महतारी........

★

फागुन महीनवाँ जब होलिया हो अइहें,

के भरी रंग पिचकारी हो रामा

रोई रोई कहे महतारी.........

मोहन-मोहनी

आवऽ-आवऽ आवऽ सखी,
धावऽ-धावऽ धावऽ सखी;
जमुना के तीरवाँ बाजल हो कन्हईया जी कऽ बंसी,
बाजल हो कन्हईया जी कऽ बंसी ॥

जुग जुग जागे लागल, तरई चारू ओरियाँ,
हरि जी हो बईठ लहोई हैं, कदम के छहियाँ;
चलऽ सखी धाई चलीं,
चलऽ हो पराई चलीं;
जमुना के तीरवाँ बाजल हो कन्हईया जी कऽ बंसी,
बाजल हो कन्हईया जी कऽ बंसी ॥

बंसी कऽ सुन तान, जियरा में लागे बान,
मछरी के नियर तड़पे देहियाँ में मोरे प्रान;
चलऽ सखी बढ़ी चलीं,
लपक लपक चलऽ चलीं;
जमुना के तीरवाँ बाजल हो कन्हईया जी की बंसी,
बाजल हो कन्हईया जी की बंसी ॥

तोड़ चल लोक लाज, छोड़ि चलऽ सगरो काज,
होत बा अबेर देखऽ, करअ ना सिंगार साज;
चला-चला चलीं सखी,
जल्दी बढ़ी चलीं सखी;
जमुना के तीरवाँ बाजल हो कन्हईया जी की बंसी,
बाजल हो कन्हईया जी की बंसी ॥

बंसी तऽ देक्खऽ सखी, हरि के नचावेले,
तबहूँ हो जाने काहे, मनवा के भावे ले;
बंसी बोलावत बा,
मनवा डोलावत बा;
जमुना के तीरवाँ बाजल हो कन्हईया जी की बंसी
बाजल हो कन्हईया जी की बंसी॥

— :o: —

छेड़-छाड़

तूँ तऽ करिया बाड़ऽ कन्हईया,
राधा देक्खऽ गोर हो।
बजा बजा के तारी लरिकन,
ब्रिज में मचवलन सोर हो॥

देक्खऽ जमुना करिया बाँड़ी,
कदम कऽ फुलवा गोर हो।
बजा बजा के तारी लरिकन,
ब्रिज में मचवलन सोर हो॥

जन्म कऽ भुक्खड़ऽ खईले खातिर,
गली गली तू मार करअऽ।
भरलऽ मटुकिया दही कऽ घर,
घर से सुनलऽ तूँ पार करअऽ॥

★

बलदेऊ भईया हो सच्चा,
तू तऽ बाड़ऽ चोर हो।
बजा बजा के तारी लरिकन,
ब्रिज में मचवलन सोर हो॥

★

कऊवा नीयर तूँ चलाक हो,
रहन न भावे तनिक कन्हईया।
बजा बजा के बंसी सबसे,
माँगऽ मक्खन दही मलईया॥

★

बात बात में कहेलऽ तूँ तऽ,
राधे गोईयाँ मोर हो।
बजा बजा के तारी लरिकन,
ब्रिज में मचवलन सोर हो॥

★

छोट घुँघट मुँह बड़ डेरवावन,
जरीके में खिसियालऽ हो।
ऊपरा से तूँ भोला भाला,
भितरा से तूँ काला हो॥

चिऊँटी नीयरऽ हाड़ मास बा,
पर बाड़ऽ मुँह जोर हो।
बजा बजा के तारी लरिकन,
ब्रिज में मचवलन सोर हो॥

गँगा-पूजन

(गुहार)

करतऽ निहोरा तूं बरऽ देतू गंगा मईया,
गोदिया हमार भरि जातऽ हो,
बन के भिखारिन अंचरा पसारत हईं,
कोखिया हमार खुली जात हो॥

★

सुनीलऽ की दुखियन कऽ दुखवा तू काटे लू हो,
सुनीलऽ की पपीयन कऽ पपवा नसावे लू हो,

तोहरे दुआरी हम अरज करत बानी,
दुखवा हमार कटि जात हो ॥

तोहके चढ़ाईबऽ सेनुर अऊर पियरी हो,
धिऊआ कऽ रोज हम चढ़ाईब तू हे दियरी हो,

मनवा कऽ दुखवा तूँ अईसन काट देतू,
लोगिनि भरम मिटि जात हो॥

तोहरा के आर पार मलवा चढ़ाईबऽ हो,
नईया पर चढ़ि के हम गितिया सुनाइब हो,

सब करब पूरा हो जेवने तूँ कहबू,
रख दे तूँ अतने मोरऽ बात हो ॥

★

देस परदेसवा तोहार गुन गईब हो,
पाँच सुहागिन संग गितिया सुनाईब हो,
सुन्नर ललना तूँ गोदिया मेंऽ देई देतू,
मनवा हुलस मोर जात हो ॥
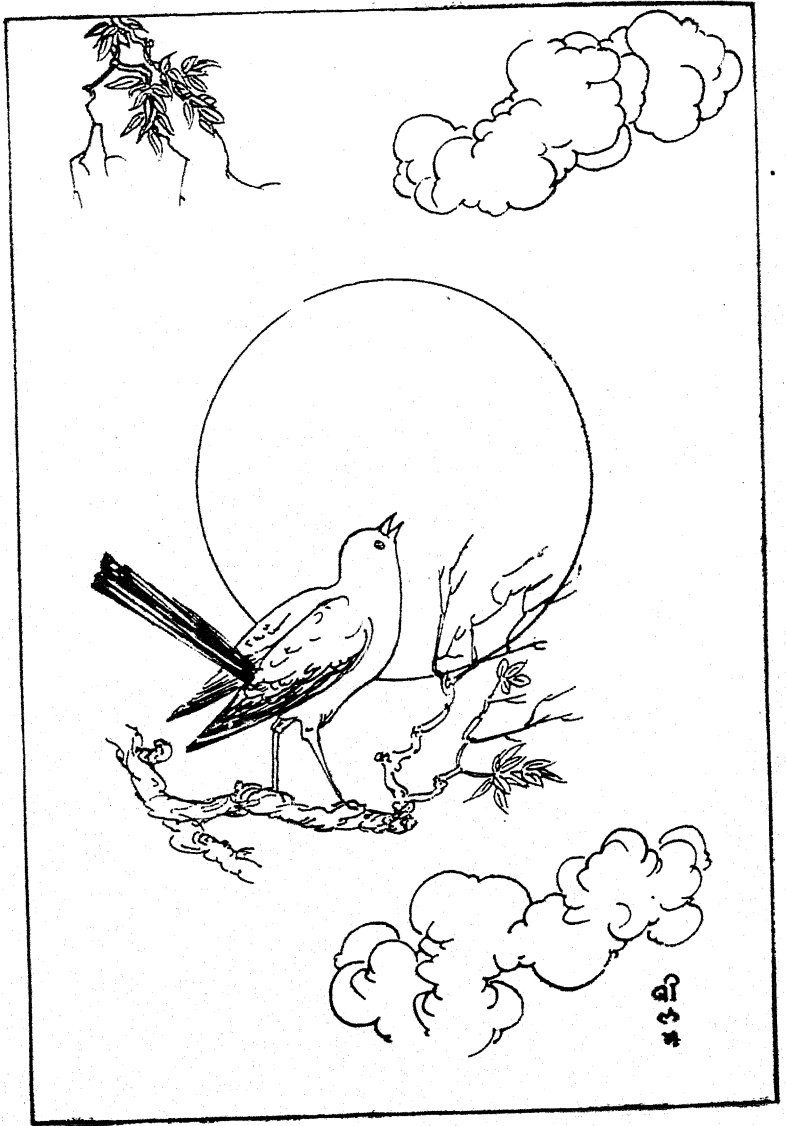
मन कऽ आसा

ऊँचे हो अँटरिया से कागा आज बोले लागल,
पिया घर आवत होईहन जियरा हो डोले लागल ॥

नेहियाँ से पढ़ि पढ़ि के रखलीं ओनकर पाती,
दुखवा हो मनवा में रखलीं दिन राती।
आवन सनेसा सुनि दुखवा भुलाए लागल,
पिया घर आवत होई हैं जियरा हो डोले लागल ॥

★

डरियन पर हँसि हँसि के खिललिन चमेलिया,
छिपे लागल देक्ख अब बैरिन कोईलिया।

आवन सनेसा सुन मनवा हो गावे लागल,
पिया घर आवत होईं हैं जियरा हो डोले लागल ॥

★

तू बतास निरमोही बन हो जरइलऽ,
दुखवा में बहि-बहि हमके सतईलऽ।

तोहरो हो करतूति अबऽ मोहें भावे लागल,
पिया घर आवत होईं हैं जियरा हो डोले लागल ॥

★

रोज हम केतना हो दियना जरवलीं,
केतने हो दियना कऽ बतिया बुझवलीं।

निसि-दिन जरे दियना मनवा हो कहे लागल,
पिया घर आवत होईं हैं जियरा हो डोले लागल ॥

★

अँगने, बेड़वन पर छईलिन अंजोरिया,
मनवा में गाईं गाईं सजले गुजरिया।
पिया कऽ आवल सुनि घर दुआर भावे लागल,
ऊँचे हो अँटरिया से कागा आज बोले लागल॥

चान-चकोर

●
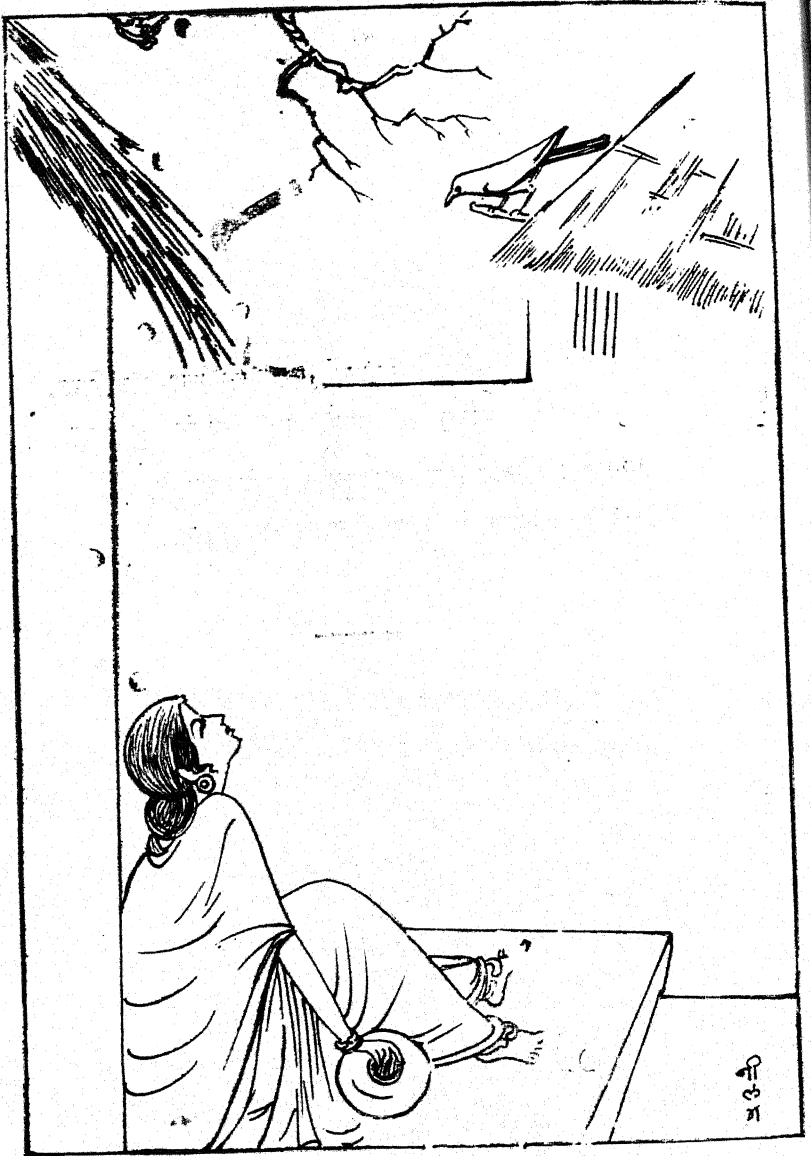
चाँन निरमोही हऊँन चिरई छली जईहें

लाख तूँ मनऊती करलऽ नियरे नऽ अईहें ॥

★

जल से निकलि के हो, चढ़लन अकासा,
तरईन के देसवा में, कईलन जाके बासा,
चिरई जनि भरोस करऽ तहें भरमईहें,
लाख तू मनऊती करलऽ नियरे नऽ अईहें ॥

जाने केकर डीठ लागल, इन की सुरतिया परऽ,
दाग लागल जिनगी भरके, इनकी मुरतिया परऽ,
जेतने पियार करबऽ ओतने घटि जईहें,
लाख तू मनऊती करलऽ नियरे नऽ अईहें ॥
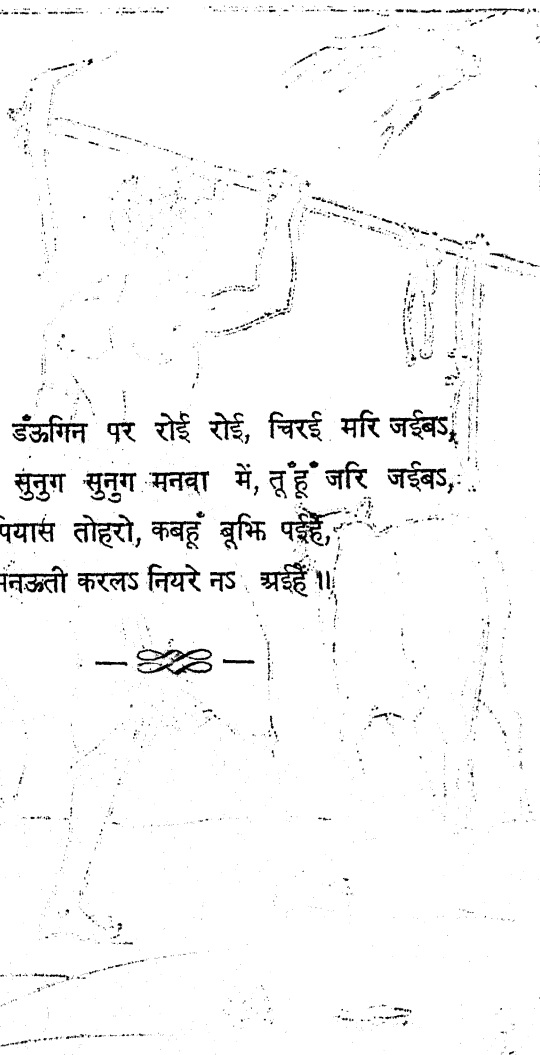
संग लेके आवलेन, तरईन कऽ बरतिया,
चुप चाप भेंटलन, दुल्हिन कारी रतिया,
चुपै बतियाई के हो, चुपै छिपी जईहें,
लाख तू मनौती करलऽ नियरे नऽ अईहें ॥

जगवा में कबहूँ नऽ, पूरलिन नेहियाँ,
साध नाहीं पूर भईलिन, गलि गईलन देहियाँ ॥
साध नाहीं तोहरो, पूरि होई पईहें,
लाख तू मनऊती करलऽ नियरे नऽ अईहें ॥

डँऊगिन पर रोई रोई, चिरई मरि जईबऽ,
सुनुग सुनुग मनवा में, तूँ हूँ जरि जईबऽ,
तबहूँ ना पियास तोहरो, कबहूँ बूझि पईहें,
लाख तूँ मनऊती करलऽ नियरे नऽ अईहें ॥

— ∞ —

पँचवर्षीय योजना में किसान

पुरुवा जगावे जागऽ जागऽ हो किसान भईया,
भगिया कऽ होवे लागल अब हो बिहान भईया ।।

★

आलस कऽ भागे लागल अब अन्हियारा हो,
करमऽ कऽ होवे लागल अब उँजियारा हो,
फेंकि कऽ चदरिया उठऽ अब हो किसान भईया,
भगिया कऽ होवे लागल अब हो बिहान भईया ।।

★

★

डंऊगी अऊर पाती से गीत अब आवे लागल,
सुभ हो सनेसा चिरई देक्ख अब सुनावे लागल,

उठि के अब तूहूँऽ करऽ नया गान भईया,
भगिया कऽ होवे लागल अब हो बिहान भईया ॥

तोहरे करमवा से धरती हो सोना उगिले,
उसर-सुहागिन होले हरियर धोतिया ओढ़ले,

अपने पसीनवा से करऽ निर्मान भईया,
भगिया कऽ होवे लागल अब हो बिहान भईया ॥

पंच वर्षीय योजना कऽ बीज अब उगे लागल,
दुखवा तोहार देक्ख छिन में अब बूड़े लागल,

तूहूँ उठि के अब करअ सरमदान भईया,
भगिया कऽ होवे लागल देक्ख हो बिहान भईया ॥

खेती लहराले देक्ख तोहरे करमवा से,
जगवा कऽ पेट भर अपने धरमवा से,

देसवा कऽ तूहीं हऊव सुन भगवान भईया,
भगिया कऽ होवे लागल अब हो बिहान भईया ॥

बहुत काम लेहलऽ ईनार अऊर पोखरी से,
नतवा अब जोड़ लेतऽ ट्यूब वेल बिजुरी से,

गाँव गाँव में होला देक्ख विद्यादान भईया,
भगिया कऽ होवे लागल देक्ख हो बिहान भईया ॥

देक्ख अब पंचाइत सगरो हो होवे लागल,
जेहिसे गरीबन कऽ दुखवा तऽ भागे लागल,

छोड़ि के लड़ाई झगड़ा बनऽ इन्सान भईया,
भगिया कऽ होवे लागल अब हो बिहान भईया ॥

★

हर बैल से अधिका टैक्टर चलिहें हों,
फलिसि जवान होके खूब लहरईहें हो,

आयल दिन नोयरे करअ हो गुमान भईया,
भगिया कऽ होवे लागल देक्ख हो बिहान भईया ॥

———
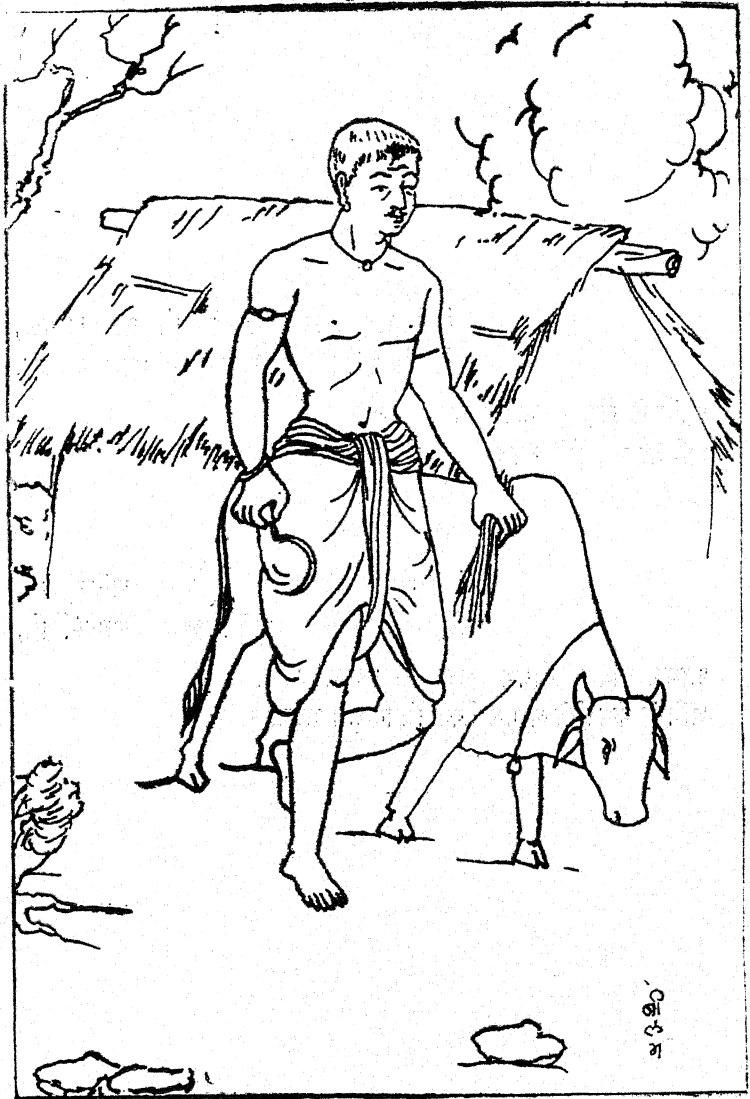
किसनवा भईया

(बिरहा)

करत हईं तोहरो बयनवा,
किसनवा भईया धियनवा लगाई के सुना,
रात सुहागिन अपनी गोदिया आके तूहें सुतावले,
पूरब कऽ ललिया हो भईया आके तूहें जगावे ले,
तूं तऽ भिनसार कऽ हऊव पहुनवाँ,
धियनवा लगाय के सुनऽ……

★

तोहरे मेहनत के कईला से धरती सोना उगिले हो,
बदल बदल के हरियर पीयर रहि रहि चुनरी ओढ़ी,
देखि देखि के ओकर करनी करलऽ अभिमनवाँ,
धियनवा लगाय के सुनऽ······

भूमें बाल हो गेहूँ जव कऽ तीसी सरसों फूले हो,
कविली चना कऽ फूल देखि के तोहरो मनवा भूले हो,
तब तूँहूँ फूली के हो करेलऽ गुमनवाँ,
धियनवा लगाय के सुनऽ······

जाड़ा गरमी बरखा में तूं खेतवन में हो तप गईलऽ,
धरती के माटी से पईदा धरती खातिर गल गईल,
तबहूँ तूँ सतोंष करके रखलऽ ईमनवां,
धियनवा लगाय के सुनऽ,

छप्पर फूस कऽ महल बना के दुखवा सबके बाँटेलऽ,
पहिर के कपड़ा चार गजन कऽ सगरो जिनगी काटेलऽ,
एही से कहावेलऽ तूँ जगमें किसनवाँ,
धियनवा लगाय के सुनऽ······

हर बैलन से नेह करऽ तूं ईहे तोहार तऽ दुनियाँ हो,
भईया बाबू कहिके बोलऽ इहे तोहार तऽ बनिया हो,
खातिर करऽ दुआरे अपने ऊँच नीच पहुनवां,
धियनवा लगाय के सुनऽ······

कंठ भरावऽ अन्न उपजा के तूँ तऽ सब लोगन कऽ हो,
दूसरा के कल्यान के खातिर धईला भेष तूँ जोगिन कऽ हो,
ऐ ही से कहावेलऽ तू जग कऽ भगवनवाँ,
धियनवा लगाई के सुनऽ ॥

— :o: —

विरह

●

जव से पिया परदेसवा में छवलन,
सुधियो न लिहलन मोर।
कईसे जरेला ओनकर दियरा कऽ बाती,
पतियो न लिखलन थोर ॥

★

सून हो अगनवाँ अंटरिया न भावे मोहें,
लागे दुआरी जस चोर।
अन, जल अऊर सिंगार नाहीं भावे मोहें,
देहियाँ झुराए जईसे धनवा कऽ पोर……

रोई-रोई रतिया में अँखिया सिराई जाले,
भींजेला अँचरा कऽ छोर।
चूल्लू भर पनियाँ में चानाँ तूँ हूँ बूड़ि जईता,
देला न सनेसा ओनके मोर………

कऊआ दहिजरा के लजियो न लागे देक्खऽ,
बईठे ना बड़ेरवन मोर………
धुआँ उठे ओरमल बदरवा जे आयल बाड़न,
छूछे मचावेलन सोर………

—:-:—